# 'राधाचरितम्' का महाकाव्यत्व

**उदयनारायण सिंह, शोधार्थी**
*सी0एम0जे0 विश्वविद्यालय, शिलाँग (भारत)*

**डॉ0 एन0 शंकरनारायणा शास्त्री**
*प्रोफेसर, सी0एम0जे0 विश्वविद्यालय, शिलाँग (भारत)*

**सार**

*विश्व वाङ्मय में भारतीय वाङ्मय की काव्य परम्परा अति प्राचीन है। विश्व साहित्य की आदि रचना ऋग्वेद में काव्य का प्रथम रूप प्राप्त होता है, जिसमें कतिपय स्थलों पर मंत्रदृष्टा ऋषि को कवि रूप में वर्णित किया है। इस प्रकार वैदिक साहित्य के ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषदों में भी यत्र–तत्र काव्यानन्द की अनुभूति होती है। इतिहास एवं पौराणिक आख्यानों में भी काव्य के स्वरूप का प्रकटीकरण होता है। संस्कृत महाकाव्य धारा का मूल उद्गम स्थल बाल्मीकि कृत रामायण ही है, जिसमें महाकाव्य की सभी प्रवृत्तियों का सम्यक् दर्शन हो जाता है। आदिकाव्य की समीक्षा करने पर महाकाव्य महाभारत उसे दिशा प्रदान करता है। वस्तुतः भारतीय महाकाव्य के उपजीव्य रामायण एवं महाभारत ही हैं। इन दोनों से ही उद्भूत काव्यधारा ने भारतीय साहित्योद्यान को सिंचित किया है और अनेक काव्य कुसुमों को विकसित किया है। 'महाकाव्य' शब्द महत् और काव्य इन दो शब्दों से मिलकर बना है। 'महाकाव्य' पद 'महच्चतत् काव्यंचेति।*[1] *इस प्रकार विग्रह होकर विशेषण विशेष्य भाव सम्बन्ध से अपने गुण द्रव्यत्व को प्रकट करता है। महयते पूज्यते यत् तत् महत्।*[2] *इसका तात्पर्य है कि महत् शब्द विशालता व्यापकता एवं गरिमा का परिचायक है।*



IJRSSH

***मुख्य षब्दः— विष्ववाड़्.मय, भारतीय वाड़्.मय, काव्यानन्द उपजीव्य, साहित्योद्यान।***

*'कर्बेः कर्म इति काव्यम।' कवि के कर्म को काव्य कहते हैं।[3] कवि कवते सर्व जानानि सर्व वर्णयति सर्व सर्वेतोगच्छति वां[4] वैदिक साहित्य में कवि को परब्रह्म, मनीषी, परिभूः स्वयंभू[5] आदि नामों से वर्णित किया है। भारतीय समालोचकों ने कवि को प्रजापति की उपाधि से विभूषित किया है।[6]*

*महाकाव्य की महत्ता मात्र आकार जन्य होकर तद्गत गुणजन्य मानी जाती है। कोई भी विशालकाय ग्रन्थ अथवा रचना केवल आकार के आधार पर महाकाव्य नहीं कही जा सकती। अपितु उसके लिए कतिपय लक्षणों का होना अत्यावश्यक है। संस्कृत साहित्य शास्त्रों में विभिन्न काव्यशास्त्रियों ने महाकाव्य के स्वरूप की व्याख्या की। समय—समय पर महाकाव्य के स्वरूप की अवधारणा में परिवर्तन एवं परिवर्धन होते रहे हैं यहाँ विभिन्न काव्यशास्त्रियों ने महाकाव्य के शास्त्रीय लक्षणों को अपने ग्रन्थों में परिभाषित किया। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र संस्कृत में सर्वप्रथम लक्षणग्रन्थ माना जाता है। नाट्यशास्त्र में काव्य के लक्षणों का प्रतिपादन यृकिचिंत कवि शिक्षा प्रसंग[7] में मिलता है। तद्पुरान्त सर्वप्रथम आचार्य भामह ने महाकाव्य के लक्षणों को देने का प्रयास किया। भामह के अनुसार महाकाव्य के लक्षण इस प्रकार हैं—*

***महाकाव्य के पारम्पारिक लक्षण***

*महाकाव्य सर्गबद्ध होता है। इसमें महापुरूषों के चरित्र का वर्णन होता है, तथा यह स्वयं भी महत् होता है अर्थात् गम्भीर विषय से युक्त होता है। महाकाव्य में ग्राम्य शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए, तथा यह उत्कृष्ट अर्थ समन्वित अलंकारयुक्त तथा*



IJRSSH

*उत्तम गुणों का आश्रय अथवा सत्यपुरूषाश्रित होना चाहिए। यह मंत्रणा, दूत, प्रेषण, प्रयाण, युद्ध, नायक का अभ्युदय इन पाँच सन्धियों से युक्त, अत्यधिक लम्बे एवं कठिन व्याख्या योग्य प्रसंगों से रहित, गुणालंकारों एवं विधिक वर्णनों से समृद्ध होना चाहिए। इसमें चतुर्वर्ग–धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का प्रतिपादन एवं अर्थ–निरूपण अर्थात् लौकिक अभ्युदय के उपदेश की प्रधानता होनी चाहिए। इसमें लौकिक आचार एवं सब रसों का समावेश होना चाहिए। महाकाव्य में नायक के वंश, पराक्रम तथा ज्ञान आदि का आदि से अन्त तक वर्णन होना चाहिए तथा प्रतिनायक का उत्कर्ष प्रदर्शित करने के लिए नायक के वध का वर्णन नहीं होना चाहिए। यदि नायक का महाकाव्य में व्यापक रूप से वर्णन न हो तो आरम्भ में उसकी स्तुति व्यर्थ है। इस प्रकार भामह के विचार से सर्गबद्धता, महान एवं गम्भीर विषय नायक का होना, चतुर्वर्ग का प्रतिपादन, नायक का उत्कर्ष, पंच सन्धियों एवं काव्य गुणों का समावेश, लोक–स्वभाव सभी रसों का निरूपण तथा विविध वर्णन–ऋतु, जलकीड़ा, चन्द्रोदय आदि महाकाव्य के प्रमुख तत्व है। भामह की परिभाषा में सर्गों की संख्या वर्णनीय विषयों की सूची तथा छन्द एवं मंगलाचरण आदि का स्पष्टतया निर्देश नहीं हैं।*[8]

***महाकाव्य के आधुनिक लक्षण***

*आधुनिक संस्कृत महाकाव्यकारों ने प्राचीन संस्कृत महाकाव्यों से पर्याप्त प्रेरणा ग्रहण की है किन्तु अपेन नवोन्मेष को अन्धानुगामी नहीं रखा है। इन महाकाव्यों में परम्परा के प्रति श्रद्धा और आधुनिकता के प्रति आकर्षण दोनों का मधुरिम संगम दिखाई देता है। अधिकांश महाकाव्य युगबोध से शतधा अनुप्राणित है तथा प्राचीन काव्यशास्त्री कसौटी पर खरे उतरते हैं। ऐसे महाकाव्य अवश्य ही अधिक व्यवस्थित और आकर्षक*

*हैं। इन महाकाव्यों में शारीरिक चेतना की अपेक्षा सामाजिक और राजनीतिक चेतना को महत्व दिया गया है। इनमें राष्ट्रभक्ति का पदे–पदे दर्शन होता है। आज पाण्डित्य प्रदर्शन आलंकारिक चमत्कृति और कवि प्रौढ़ोक्ति संबलित कल्पना वैशद्य का युग लद गया है। अधिकांश महाकाव्य वाल्मीकि की स्वाभाविकता और कालिदास के प्रसाद–ललित उद्‌गारों से अभिमण्डित हैं। दो हजार वर्ष की लम्बी यात्रा के अनन्तर संस्कृत कविता जहाँ से चली वहीं पहुँच गई किन्तु लौटी युगबोध की सजगता और अन्य भाषा सम्पर्क का गहरा प्रभाव लेकर। महाकाव्य के परिवर्तमान रूप का अवलोकन कर उसकी निश्चित परिभाषा देना कठिन है।*

***आधुनिक भारतीय मान्यताएँ***

*पं० रामचन्द्र शुक्ल ने चार प्रमुख तत्वों को महत्व दिया है–इतिवृत्त, वस्तु व्यापार वर्णन, भावव्यंजना तथा संवाद, इसमें प्रथम तीन तो बहुचर्चित तथ्य हैं किन्तु संवाद एक अत्यन्त अभिलक्षणीय विशेषता थी, जिसकी ओर प्राचीन काव्यशास्त्रियों ने महाकाव्य का लक्षण करते समय ध्यान नहीं दिया। यदि नाट्यसन्धियों से वस्तुविन्यास व्यवस्थित होता है तो संवादों की योजना से विषय–वस्तु में प्रभाव और आकर्षण दुगुणित हो उठता है। वस्तुतः बीज, बिन्दु आदि का सुभग सन्निवेष संवादों के अंशों में भी किया जा सकता है। संवादों के कारण पात्र–चित्रण अत्यन्त हृदयस्पर्शी और प्रेरक हो जाता है जो महाकाव्य संरचना का एक विशिष्ट प्रयोजन है। संवादों का महत्व इसी से स्पष्ट है कि आज हम कहते हैं–''गीता में स्वयं भगवान ने कहा है'', ''रामायण में स्वयं राम ने कहा है'' आदि। कवि को समग्र रचना में ऐसा वर्णन करना चाहिए कि कवि के स्थान पर पात्र का व्यक्तित्व ही सामने आये और पात्र इतना महान लगे कि उसकी बात टालना*



IJRSSH

*सामाजिक को व्यवहारिक जीवन में भी सहज सम्भव न हो। यह कार्य संवादों के माध्यम से विशेष रूप से सम्भव है।*

*श्रीबंकिमचन्द्र चट्टोपध्याय[9] ने पात्र चरित्र–चित्रण के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण बात कही है कि देव चरित्र के प्रणयन में भी कवि को उसे मनुष्य पात्र के साँचे में ढालकर प्रस्तुत करना चाहिए। बंकिमचन्द्र के इस कथन से बाल्मीकि का पात्र चित्रण आदर्श रूप में प्रस्तुत हो उठता है। देवपात्रों का मानवोचित वर्णन मानवीय मनोवृत्तियों का उद्भूत करने में अधिक समर्थ होता है। सहज ही आस्वाद के धरातल पर उतर जाता है। फलतः सामाजिक द्वारा तत्पात्रानुकृति स्वभावतः सम्भव हो जाती है। अतः पात्रों की प्रतीति असम्भव या कोरी कल्पना जैसी चीज नहीं होनी चाहिए। इस प्रकार देवपात्रों का मानवीयकरण तत्सम्बन्ध महाकाव्य का एक अनिवार्य तत्व है।*

***राधाचरितम् का महाकाव्यत्व परीक्षण***

*आचार्यों के निर्देशानुसार 'राधाचरितम्' महाकाव्य का प्रारम्भ मंगलाचरण से हुआ है। महाकवि डॉ० हरिनारायण दीक्षित ने पूज्या वन्दनीया कृष्णप्रिया राधा चरित् के प्रस्तुतिकरण हेतु प्रारम्भ में राधा का चित्रण किया है। प्रारम्भिक पद्य वस्तु निर्देशात्मक है जिसमें राधा का परिचय तथा उसकी कृष्णवियोग दशा का चित्रण है। इस श्लोक के माध्यम से महाकवि की भूमिका तैयार करते हैं कृष्ण की अनन्या राधा उनके वियोग में वृन्दावन के यमुनानट पर कदम्बवृक्ष के नीचे कृष्ण स्मृति में लीन है। इससे राधा के वियोगजन्य कष्ट की अनुभूति कराते हुए उसके सकारात्मक चिन्तन की ओर संकेत करते हैं, जिसके कारण वह ब्रजवासियों के उत्थान एवं विकास में समर्थ हो सकी।*



IJRSSH

*इस पद्य में चित्रित राधा आद्याशक्ति स्वरूपा है जो न केवल ब्रजवासियों को, अपितु सहृदयपाठकगणों के लिए जीवन दायिनी है, आह्लादमयी है।*

*इस ग्रन्थ का प्रारम्भ 'क' वर्ण से हुआ है, जो न केवल संस्कृत वर्णमाला का प्रथम व्यंजन है अपितु ब्रह्मा, विष्णु, कामदेव, जीव आदि का भी द्योतक है।[10] इसे विष्णु के अवतार कृष्णा काा व्यंजक माना जा सकता है, जो ब्रह्म स्वरूप है, कामदेव के समान सौन्दर्यशाली है और समस्त जीवों का मूलाधार परमात्मा है। इस पद्य में 7 बार 'क' की आवृत्ति है।*

*कलिन्दकन्या कालिन्दी यमुना कृष्ण की क्रीड़ास्थली है और यम की भगिनी तथा मुक्तिदायिनी है। कालिन्दी, कमनीयकूल और कदम्ब वृक्ष प्रकृति के अंग हैं। इस प्रकार कवि ने इस पद्य में प्रकृति को भी नमन किया है। यह प्रकृति भले ही सांख्य की 'आद्य प्रकृति' नहीं है किन्तु जगत् के प्राणियों को प्राणधारण कराने वाली प्रकृति की प्रतीक अवश्य है।*

*राधाचरित् को महाकाव्य में बद्ध करने वाले डॉ० दीक्षित ने प्रारम्भिक 4 श्लोकों में 'कृष्ण' पद का प्रयोग कर उनके प्रति भी नमन किया है और कृष्णप्रिया के चरित् को काव्यबद्ध करने के लिए परोक्षरूप से कृष्ण का स्मरण किया है।*

*इस मंगलाचरण में उपजाति छन्द का प्रयोग है, जो उपेन्द्रवज्रा, इन्द्रवज्रा का मिश्रित रूप है। प्रथम पंक्ति उपेन्द्रवज्रा की है, उपेन्द्र का प्रयोग हरिवंशपुराण[11] में श्रीकृष्ण के लिए किया गया है। वामन शिवराम आप्टे के संस्कृत हिन्दी कोष के अनुसार[12] उपेन्द्र की पर्याय विष्णु का पाँचवाँ अवतार वामन है, इसीलिए विष्णु के नाम का अर्थ देने वाले, उपेन्द्रवज्रा छन्द के प्रयोग से भी विघ्नों को हरने वाले कर्मयोगी श्रीकृष्ण के*



IJRSSH

*द्वारा सभी के दुःख दूर हों ऐसा अभिप्राय व्यजिंत है, इसके द्वारा महाकवि ने अपनी बुद्धिमत्ता व विवेकशीलता का परिचय दिया है एवं कालिदास द्वारा अग्रसर की गयी परम्परा का भी निर्वाह किया है।*

*महाकाव्य का इतिवृत्त ख्यात है, जिसका आधार पुराण है। पुराणों की 'कृष्ण कथा' को उपजीव्य बनाकर अनेक महाकाव्यों की रचना हुई है। अतः इतिहासकारों द्वारा कृष्णाश्रित महाकाव्यों की एक पृथक् कोटि निर्धारित की गई है। महाकवि डॉ० दीक्षित की यह मौलिकता है कि उन्होंने अपने महाकाव्य के लिए कृष्ण के नहीं, अपितु राधा के चरित् को चुना। इतिवृत्त अथवा कथावस्तु का विस्तृत विवेचन तृतीय अध्याय में प्रस्तोतव्य है।*

*आचार्यों ने कथावस्तु दो प्रकार की मानी है–प्रथम अधिकारिक या मुख्य कथावस्तु तथा द्वितीय प्रासंगिक अथवा गौण।[13] कथा के प्रधानकाल का स्वामी अधिकारी कहलाता है और उसके इतिवृत्त को अधिकारिक कहते हैं।[14]*

*राधाचरितम् की राधा के चिन्तन से प्रारम्भ होकर कृष्ण के साथ राधा के महाप्रयाण पर्यन्त कथा आधिकारिक कथा है। नारद का आगमन, नारद द्वारा द्वारका में कृष्ण के सभी पत्नियों के साथ पृथक–पृथक् दर्शन, राधा को संदेश, व्रजदर्शन, श्रीकृष्ण की शिरोवेदना तथा पैरों के फफालों की कथा आदि प्रासंगिक कथा है, जो प्रधान इतिवृत्त के विकास में सहायक होती है।*

*भारतीय आचार्यों ने महाकाव्य के इतिवृत्त में **पंचनाट्य सन्धियों** की योजना करके उसे श्रृंखलाबद्ध करने का प्रयास किया है।[15] कवि द्वारा वृत्त के उपस्कार का साधन*



IJRSSH

*सन्धि योजना में जिसमें वृत्त के प्रकार वैचित्र्य की कल्पना रहा करती है। नाटक की पाँचों अर्थ प्रकृतियों तथा कार्य भी सभी अवस्थाओं एवं पाँचों सन्धियों की स्थिति मानते हुए इन्हें रसभिव्यक्ति में सहायक होना चाहिए ऐसा कहा है।*[16]

*अर्थ प्रकृतियाँ मुख्य प्रयोजन के साधन को उपाय कही जाती हैं। अर्थ प्रकृति का अवस्था से सम्बन्ध सन्धि कहा जाता है। **अर्थ प्रकृति पाँच हैं–बीज, बिन्दु,** पताका, प्रकरी, कार्य*[17] *पाँच ही कार्य अवस्थाएँ हैं–आरम्भ, यत्न, प्रात्याशा, नियताप्ति, फलागम।*[18] *इन दोनों के मेल से पाँच सन्धियाँ बनती हैं–मुख, प्रतिमुख गर्भ अवमर्श, उपसंहृत (निर्वहण)।*[19]

*महाकाव्यों में सन्धि योजना का दिग्दर्शन करते समय यह तथ्य कदापि विस्मृत नहीं करना चाहिए कि काव्य प्रबन्धों में सन्धि संघटना या संध्यंगयोजना एक मात्र रसाभिव्यंजन के लिए आवश्यक है न कि नाटयशास्त्र की विधि के अनुष्ठान के लिए ध्वनिकार आनन्दवर्धन का कथन है*[20]*–*

***सन्धिसन्ध्यंगघटनं रसाभिव्यक्तपेक्षया।***

***न तु केवलया शास्त्रस्थितिं सम्पादेनच्छया।।***

*राधाचरितम् महाकाव्य में पाँचों नाट्यसन्धियाँ प्राप्त होती हैं, जो भारतीय आचार्यों द्वारा निर्दिष्ट है। इन सन्धियों के समावेश से राधाचरितम् महाकाव्य का कथानक सुगठित है इसमें एकान्विति और सुसम्बद्धता है।*

***मुखसन्धि***–*जहाँ अनेक प्रकार के प्रयोजन एवं रस को निष्पन्न करने वाली बीजोत्पत्ति होती है वह मुख सन्धि है।*[21] *राधाचरितम् में प्रथम सर्ग से तृतीय सर्ग तक बीज एवं प्राम्भ नामक अवस्था के संयोग से निर्मित मुखसन्धि है।*

***प्रतिमुख सन्धि***–*जहाँ उस बीज का कुछ लक्ष्य रूप में और कुछ अलक्ष्य रूप में उद्भेद होता है, वह प्रतिमुख सन्धि है।*[22] *राधाचरितम् महाकाव्य में चतुर्थ सर्ग से दशम सर्ग तक प्रतिमुख सन्धि है। बिन्दु एवं प्रयत्न की निर्मिति प्रतिमुख नामक सन्धि इन सर्गों में दर्शनीय है।*

***गर्भ सन्धि***–*जहाँ दिखाई देकर खोये गये बीज का बार–बार अन्वेषण किया जाता है वह गर्भ सन्धि है।*[23] *राधाचरितम् में ग्यारवहें सर्ग से लेकर बीसवें सर्ग तक गर्भ सन्धि है, जहाँ पताका व प्रत्याशा का संयोग है।*

***विमर्श सन्धि***–*जहाँ क्रोध से व्यसन से अथवा प्रलोभन से फलप्राप्ति के विषय में विमर्श किया जाता है तथाा जिसमें गर्भ सन्धि द्वारा निर्भिन्न बीजार्थ का सम्बन्ध दिखाया जाता है, वह विमर्श सन्धि है।*[24] *राधाचरितम् महाकाव्य में देशना नामक इक्कीसवें सर्ग में प्रकरी व नियताप्ति के संयोग से विमर्श सन्धि प्राप्त होती है।*

***निर्वहण सन्धि***–*जहाँ बीज से सम्बन्ध रखने वाले मुखसन्धि आदि में अपने–अपने स्थान पर बिखरे हुए अर्थों का एक प्रयोजन के साथ सम्बन्ध दिखाया जाता है। वह निर्वहण सन्धि कहलाती है।*[25] *राधाचरितम् में बाईसवें सर्ग महाप्रस्थान में राधा के कृष्ण के साथ महाप्रस्थान में निर्वहण सन्धि है। क्योंकि यहाँ फलागम नामक कार्यावस्था व*



IJRSSH

*कार्य नामक अर्थप्रकृति का संयोग है। वहाँ कृष्ण के साहचर्य में गोलोकधामगमन रूप फल की प्राप्ति से निर्वहण सन्धि है।*

*महाकाव्य का* ***उद्देश्य पुरुषार्थ*** *चतुष्ट्य माना गया है। राधाचरितम् महाकाव्य के इतिवृत्त का उद्देश्य राधा के माध्यम से सहृदयों को सांसारिक कर्त्तव्यों का बोध कराना उन कर्त्तव्यों की ओर उन्मुख करना तथा कृष्ण भक्ति के माध्यम से मोक्ष रूप परमपद की प्राप्ति के लिए प्रेरित करना है। इस* ***काव्य का अन्त सुखमय*** *है।*

*"**सर्गबद्धम् महाकाव्यम्**" का निर्वाह भी राधाचरितम् महाकाव्य में किया गया है। इस महाकाव्य में अष्ट सर्ग से अधिक सर्ग अर्थात् द्वाविंशति सर्ग है जो न बहुत छोटे न बहुत बड़े हैं। सभी सर्गों का नामकरण उसमें वर्णित कथावस्तु के आधार पर है।*[26] *यह सभी नाम बहुत सार्थक हैं जैसे–चिन्तन सर्ग, उदबोधन, सम्बोधन, ब्रजदर्शन, प्रियदर्शन, प्रकृतिपोषण, राधाचरणरेणु, द्वारका दर्शन, कृष्णगुरुजनदर्शन, महाप्रस्थान सर्ग आदि हैं। सर्गों के अन्त में आगामी सर्ग की कथा की सूचना दी गयी है। जैसे द्वाराका दर्शन सत्रहवें सर्ग के अन्त में, कृष्ण गुरुजन दर्शन (अठारहवें सर्ग) की कथा की सूचना मिलती है।*

*भारतीय मान्यता श्रव्य में* ***श्रुति मधुर छन्द प्रयोग*** *की आवश्यक व अर्थानुकूल प्रयोग को श्रेष्ठ मानती है। कुछ तो समस्त काव्य में एक छन्द का प्रयोग को महत्ता देते हैं और कुछ एक सर्ग में भिन्न–भिन्न छन्दों को ठीक समझते हैं। राधाचरितम् के प्रत्येक सर्ग में एक ही छन्द का प्रयोग हुआ है तथा सर्गान्त में छन्द परिवर्तन सम्बन्धी नियम*

*का भी पालन हुआ है। तेहरवें सर्ग (प्रकृति पोषण) में केवल एक ही छन्द का प्रयोग किया गया है। इस सर्ग के अन्त में छन्द परिवर्तन नहीं है।*

*राधाचरितम् महाकाव्य में **शान्त रस अंगी रूप** में उपस्थित होता है। **विप्रलम्भ श्रृंगार** रस तथा **वात्सल्य रस** उसके अंग रूप में पुष्टि हेतु प्रयुक्त हैं। इसका विस्तृत विवेचन षष्ठ अध्याय में किया जायेगा। कदाचित यह भ्रम हो सकता है कि इसका प्रधान रस विप्रलम्भ श्रृंगार रस है, किन्तु गहनता से आद्योपान्त अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि अन्य सभी रस शान्त रस में ही पर्यवसित होते हैं। महाप्रस्थान सर्ग में शान्त रस के साथ ही ग्रन्थ की समाप्ति होती है।*

*राधाचरितम् महाकाव्य प्रकृति वर्णन की अद्भुत स्थल है। ''कलिन्दकन्या कमनीय कूले'' ..... से आरम्भ होने वाला यह महाकाव्य प्रकृति के सुरम्य चित्रों को शब्दों के माध्यम से प्रस्तुत करता है। वृन्दावन, गोवर्धन, यमुना, लताकुंज, गाय आदि के विस्तृत वर्णन द्वारा कवि प्रकृति के प्रति अपने प्रेम को तो प्रकट करता है कि महाकाव्य के प्रकृति वर्णन के नियम का भी निर्वाह करता है। इसके साथ ही बसन्त वर्णन[27], नग वर्णन[28], यात्रा वर्णन[29], समुद्र वर्णन[30], कलियुग वर्णन[31] आदि के द्वारा ग्रन्थ को महाकाव्यत्व भी प्रदान करता है। इतना ही नहीं वह वर्तमान युग के परिप्रेक्ष्य में प्रकृति के संरक्षण की शिक्षा हेतु एक पूर्ण सर्ग की रचना करता है।*

*राधाचरितम् महाकाव्य की भाषा सहज, माधुर्य एवं प्रसादगुणयुक्त है जिसमें **अलंकार** सहज रूप से अवतरित होते रहते हैं। गेयता और लयबद्धता महाकवि के भाषा वैशिष्टय की परिचायक है।*



IJRSSH

*राधाचरितम् महाकाव्य की **शैली** प्रौढ़ है, जिसमें काव्य सौष्ठव एवं काव्य के यथोचित गुण विकसति होते हैं। सुन्दर पदावली काव्य को मधुरिमा को द्विगुणित करती है और वैदर्भी रीति उसको सहज, सुगम, सरल और सुबोध बनाती है।*

*राधाचरितम् महाकाव्य नायक प्रधान नहीं है अपितु **नायिका प्रधान** है। इसकी नायिका राधा सद्ंशोद्भव गोपकन्या है, जिसमें सन्नारी के समस्त गुण विद्यमान हैं यद्यपि राधा नायिका के अष्ट भेदों में से प्रेषित भर्तृका कोटि की नायिका है तथापि यह धैर्यशालिनी, मनस्विनी, तपस्विनी, आनन्ददायिनी, नेत्री के रूप में उभर कर सामने आती है। संक्षेपतः नायिका राधा में वह समस्त विशेषताएँ एवं योग्यताएँ प्राप्त होती हैं जो एक महाकाव्य के सर्व प्रमुख पात्र में होनी चाहिए। वह **सामर्थशालिनी, नीतिज्ञा तथा लोकपलिता** है। उसका **चरित्र आदर्श** एवं अनुकरणीय है।*

*नायिका प्रधान राधा चरित महाकाव्य का नामकरण राधा के नाम ही किया गया है। अतः महाकाव्य का नामकरण सम्बन्धी लक्षण भी राधाचरितम् पर भी पूर्णरूपेण घटित होता है।*

*राधाचरितम् महाकाव्य की विशेषता यह है कि इसमें कोई **प्रतिनायक** अथवा प्रतिनायिका नहीं है। जो नायिका राधा के कार्यों में विघ्नकारी हो अथवा जिसके साथ संघर्ष दिखाकर नायिका द्वारा प्रतिनायिका की पराजय दिखायी जा सके। रूक्मिणी, सत्यभामा आदि कृष्ण की पत्नी सपत्नी के ईर्ष्या दाह अथवा वैमनस्य से अभिभूत नहीं दिखायी गयी है किन्तु राधाचरणरेणु सर्ग और कृष्णगुरुजन दर्शन सर्ग में राधा के प्रेम को अतिशयता से वे अवश्य अभिभूत हो जाती है।*



IJRSSH

*महाकाव्य के अन्त में राधा ब्रजवासियों को कलियुग तथा श्रीकृष्ण भक्ति के उद्‌बोधन से धर्म एवं न्याय की* ***स्थापना*** *का नायक/नायिका का प्रधान कार्य सम्पन्न करती है और महाकाव्य की नेत्री अथवा* ***प्रधानतम पात्री*** *होने का दायित्व निर्वाह करती है।* ***गौण पात्रों*** *की योजना के अन्तर्गत नन्द, यशोदा, नारद, रूक्मिणी, सत्यभामा आदि पात्र भी रस प्रवाह में योगदान देते हैं।*

*इस प्रकार डॉ० हरिनारायण दीक्षित द्वारा रचित राधाचरितम् ग्रन्थ महाकाव्य के प्रायः सभी निर्दिष्ट लक्षणों से अन्वित होता हुआ महाकाव्य की निकषा पर पूर्णरूपेण सिद्ध प्रतीत होता है अतः गणना महाकाव्य की कोटि में करना उचित ही है।*

***सन्दर्भ ग्रन्थ सूची***

1. *शब्दकल्पद्रुम्–तृतीय भाग, पृष्ठ सं० 655*
2. *वहीं पृष्ठ सं० 652*
3. *कवनीयं काव्यम्–लोचनकार*
   *कवयतीति कवि तस्य कमं काव्यं–विद्याधर*
   *कौति शब्दायते विमृश्वतें रसभाषानिति कविः तस्य कर्म काव्यम्–भट्टगोपाल*
   *लोकोत्तरवर्णनानि पुण्यकविकर्म काव्यम्–काव्यप्रकाशकार,*
   *प्रज्ञा नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभाषाता। तदनुप्राणंजीवेद् वर्णनानिपुणः कवि।*
   *तस्व कमं स्मृतं काव्यम्। भामह*
4. *शब्दकल्पद्रुम–तृतीय भाग पृष्ठ सं० 68*
5. *ईशायस्योपनिषद् मन्त्र् पृष्ठ सं० 8*
6. *अपारोकाव्यसंसारे कविरेका प्रजापति। अग्निपुराण, 339/10*
7. *भारत नाट्यशास्त्र, पृष्ठ सं० 24–27*
8. *भामह–का०अं०–1/19–23*
9. *बंकिमग्रन्थावली–पृष्ठ सं० 56–57*



IJRSSH

10. *शब्दार्थकोस्तुभ, पृष्ठ सं० 284*
11. *तदस्माकं गुरुत्वं हि प्राणदशय महाबलः।*

    *अृप्रभूति नौ राजा त्वमिद्रो वैभव प्रभो।। हरिवंश पुराण–विष्णुपर्व, 19–48*
12. *वामन शिवराम आप्टे–संस्कृत हिन्दी कोष, पृष्ठ सं० 216*
13. *वस्तुश्य द्विविधात्राधिकारिक मुख्यगङं विदुः दशरूपक 1/11*
14. *अधिकारः फलस्वाम्यधिकारी च तत्प्रभुः तन्निवृर्त्यमभिव्यापि वृत्तस्यादाधिकारिकम्, दशरूपक, 1/12*
15. *सर्वे नाट्यसन्ध्यः स०द० 6/317*
16. *ध्वन्यालोक 3/68*
17. *सा०द० 1/18*
18. *सा०द० 1/19*
19. *सा०द० 1/22*
20. *ध्वन्यालोक 3/12*
21. *द०रु० 1/37*
22. *द०रु० 1/51*
23. *द०रु० 1/66*
24. *द०रु० 1/81*
25. *द०रु० 1/96*
26. *नामस्य, सार्गोपादेय कथणा सर्गनाम तु। स०द० 6/325*
27. *राधा, 6/14*
28. *राधा, 17/4–10*
29. *राधा, 9/35–95*
30. *राधा, 17/55–57*
31. *राधा, 21/21–101*

IJRSSH